Date – 08/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Theory of non-existence : Mimamsa

Scanned with CamScanner

6. अनुपलब्धि (Non - existence)

मीमांसा दर्शन में कुमारिल भट्ट अनुपलब्धि को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं। इस प्रमाण के द्वारा किसी विशेष स्थान एवं समय में किसी विशेष वस्तु के अभाव का ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे, जब हम यह कहते हैं कि "इस कमरे में घड़ा नहीं है" तब हम घड़े के अभाव का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कुमारिल भट्ट के अनुसार घड़े के अभाव

का यह ज्ञान अनुपलब्धि प्रमाण के द्वारा होता है।

नैयायिक यद्यपि अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ मानते हैं परन्तु इसका ज्ञान वे प्रत्यक्ष प्रमाण के द्वारा गम्य मानते हैं। प्रभाकर अभाव को अधिकरण रूप मानकर उसे स्वतंत्र पदार्थ नहीं मानते फलतः इसके ज्ञान के लिए किसी स्वतंत्र प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं रही जाती है।

भट्ट मीमांसक (कुमारिल भट्ट एवं उनके अनुयायी) तथा अद्वैत वेदान्ती अनुपलब्धि को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में मानते हैं। इसके लिए वे निम्न तर्क देते हैं।

(1) प्रत्यक्ष के लिए इन्द्रियार्थ - सन्निकर्ष आवश्यक होता है, जो अभाव के सम्बन्ध में संभव नहीं है।

(2) अभाव का अनुमान भी नहीं हो सकता क्योंकि यहाँ व्याप्ति ज्ञान नहीं होता। व्याप्ति ज्ञान भी मूलतः प्रत्यक्ष पर ही आश्रित होता है जो कि अभाव के मामले में असम्भव है।

(3) अभाव का ज्ञान शब्द प्रमाण या उपमान से भी सम्भव नहीं है क्योंकि यहाँ न तो आप्त वाक्य की आवश्यकता होती है और न ही सादृश्य वस्तु की।

स्पष्ट है कि भट्ट मीमांसकों के अनुसार अभाव का ज्ञान प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान या अर्थापत्ति से संभव नहीं है। अतः अभाव के ज्ञान के लिए अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण मानना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner